Research Article

त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश की शाक्त दीर्घा में प्रदर्शित सप्तमातृकाओं की मूर्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रणय शर्मा[1*]

[1]शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author: *प्रणय शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14673854

सारांश

यह शोध पत्र मध्य प्रदेश के उज्जैन स्थित त्रिवेणी संग्रहालय की शाक्त दीर्घा में प्रदर्शित सप्तमातृकाओं की मूर्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। सप्तमातृकाएं भारतीय धर्म, संस्कृति, और कला में गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व की प्रतीक हैं। इस अध्ययन में इन मूर्तियों के शिल्प, प्रतिमा विज्ञान, और उनके धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता का गहन विवेचन किया गया है। शोध में इन प्रतिमाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैलीगत विशेषताओं, और उनकी निर्माण-प्रक्रिया पर चर्चा की गई है। मूर्तियों के प्रतीकात्मक स्वरूप, उनके आभूषण, मुद्राओं, और अन्य कलात्मक तत्वों का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन उनकी सामाजिक और धार्मिक भूमिका को समझने का प्रयास करता है। इसके साथ ही, सप्तमातृकाओं के निर्माण काल और उनके सांस्कृतिक प्रभाव का भी परीक्षण किया गया है। यह शोध त्रिवेणी संग्रहालय में संरक्षित इन मूर्तियों की कलात्मकता और उनकी ऐतिहासिकता को उजागर करने के साथ-साथ, भारतीय शाक्त परंपरा में उनके योगदान और महत्व को रेखांकित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य न केवल भारतीय मूर्तिकला और शिल्पकला के इस अनूठे पहलू को समझना है, बल्कि भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं के व्यापक संदर्भ में सप्तमातृकाओं के महत्व को भी रेखांकित करना है। यह शोध भारतीय कला और संस्कृति के शोधार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ साबित होगा।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 18-11-2024
- **Accepted:** 05-01-2025
- **Published:** 16-01-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 22-26
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

प्रणय शर्मा. त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश की शाक्त दीर्घा में प्रदर्शित सप्तमातृकाओं की मूर्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2025;4(1): 22-26.

मुख्य शब्द: भारतीय कला और संस्कृति, सप्तमातृका, एलोरा, विक्रम विश्वविद्यालय, ब्रह्मांडीय ऊर्जा, त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन

प्रस्तावना

सप्तमातृका भारतीय पौराणिक परंपरा में सात देवी रूपों का ऐसा समूह है, जो स्त्री शक्ति, मातृत्व, और ऊर्जा के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन देवी रूपों में ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी, और चामुंडा या नारसिंही प्रमुख हैं। इनका उल्लेख महाभारत, मार्कंडेय पुराण, मत्स्य पुराण, देवी भागवत और तांत्रिक ग्रंथों में विस्तृत रूप से किया गया है। सप्तमातृकाएं स्त्रीत्व की शक्ति और मानवता की रक्षा के प्रतीक के रूप में मानी जाती हैं। यह समूह मातृ प्रधान समाज की प्राचीन मान्यताओं और सांस्कृतिक परंपराओं को भी परिलक्षित करता है। दुर्गा न केवल मातृ शक्ति के रूप में अपितु विनाश करने वाली देवी के रूप में भी पूजनीय है। देवी महात्म्य में देवी दुर्गा की उत्पत्ति देवताओं की शक्ति के रूप में होना बताया गया है। इसी कारण ये देवियां सृष्टि की रचना, संरक्षण और संहार की कर्त्ता के रूप में देवों की सहभागी हुई। भारतीय मूर्तिकला और चित्रकला में सप्तमातृकाओं का विशेष स्थान है। प्राचीन मंदिरों की दीवारों, स्तंभों, और गुफा चित्रों में इनका कलात्मक चित्रण देखा जा सकता है। ये देवी न केवल शक्ति और सृजन का प्रतीक हैं, बल्कि लोक जीवन, अनुष्ठानों, और धार्मिक क्रियाओं

© 2025 प्रणय शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में भी इनकी महत्ता स्थापित है। सप्तमातृकाओं की पूजा विशेष रूप से तंत्र साधना और दुर्गा पूजा के संदर्भ में की जाती है।

शोध केंद्र

प्रधानमंत्री एक्सीलेंस माधव वाणिज्य कला महाविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध के उद्देश्य और महत्व

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य, मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में स्थित त्रिवेणी संग्रहालय की शाक्त दीर्घा में प्रदर्शित सप्तमातृकाओ की मूर्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना, दीर्घा में प्रदर्शित मूर्तियों के स्वरूप, प्रतिमा निर्माण, शिल्पांकन विधि, प्रतिमाओं के आयाम का अध्ययन करना तथा उत्खनित मूर्तियों के निर्माण समय से इस काल की प्रतिमा शैली पर प्रकाश डालना है। शोध के द्वारा सप्तमातृकाओं के पौराणिक, प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक पहलुओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन उनके धार्मिक महत्व, तांत्रिक परंपराओं में उनकी भूमिका, और भारतीय कला और साहित्य में उनके चित्रण को समझने का प्रयास करेगा। साथ ही, यह शोध इस बात का भी विश्लेषण करेगा कि सप्तमातृकाओं की यह परंपरा आज के समाज में कैसे प्रासंगिक है और किस प्रकार यह भारतीय संस्कृति के मूल्यों और परंपराओं को संरक्षित करती है।

सप्तमातृका की पौराणिक उत्पत्ति

सप्तमातृका की उत्पत्ति का वर्णन विभिन्न पौराणिक कथाओं में मिलता है।

1. **पुराणों में उल्लेख**: मार्कंडेय पुराण और देवी महात्म्य में सप्तमात्रिका को देवी दुर्गा के सहयोगी रूप में दर्शाया गया है। इनका संबंध महिषासुर मर्दिनी की कथा से है, जहां वे दैवीय शक्तियों के रूप में प्रकट होती हैं। मत्स्य पुराण और विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार सप्तमातृकाओं के प्रदुर्भाव में शिव की सत्ता समाहित है। हिरण्याक्ष राक्षस के पुत्र अंधक को शिव ने वरदान दिया कि युद्धभूमि में तुम्हारे रक्त की हर बूंद से योद्धा उत्पन्न होगा। अंधक ने अत्याचार से शिव से युद्ध किया और रक्त की बूंद गिरने से रोकने के लिए शिव ने सप्तमातृकाओं की उत्पत्ति की।
2. **महाभारत में विवरण**: महाभारत के अनुशासन पर्व में सप्तमातृका का उल्लेख किया गया है।
3. **शिव पुराण और तंत्र ग्रंथों में**: तंत्र परंपरा में सप्तमातृका का संबंध शिव और शक्ति से है। इन्हें ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, वाराही, इन्द्राणी, कौमारी और चामुंडा के रूप में दर्शाया गया है।

सप्तमातृका का प्रतीकात्मक अर्थ

सप्तमातृका केवल देवी रूप नहीं हैं; वे मानव मनोविज्ञान और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती हैं। सप्तमातृका अज्ञान को समाप्त करने वाली और चेतना को जागृत करने वाली शक्तियाँ हैं।

प्रत्येक देवी का स्वरूप और गुण:

ब्रह्माणी: सृजन की शक्ति।
वैष्णवी: पालन की शक्ति।
माहेश्वरी: विनाश की शक्ति।
वाराही: पराक्रम और बल का प्रतीक।
इन्द्राणी: शक्ति और सत्ता।
कौमारी: योद्धा और विजय।
चामुंडा: अराजकता और बुराई का अंत।

सप्तमातृकाओं का समूह एक पट्टिका पर अंकित दिखाया जाता है, जिसमे बाईं ओर भगवान शिव या उनके गण वीरभद्र और दाहिनी तरफ गणेश जी मूर्ति का अंकन होता है।

सप्तमातृका की मूर्तिकला

भारत की कला परंपरा में सप्तमातृका का विशिष्ट स्थान है। मूर्तियों में प्रायः तीन स्थितियां पाई गई हैं :

1. **स्थानक** : खड़ी मुद्रा में
2. **आसनस्थ** : बैठी हुई मुद्रा में
3. **नृत्यरत** : नृत्य करती मुद्रा में

प्राचीन मूर्तिकला में चित्रण

एलोरा और एलिफेंटा की गुफाओं में सप्तमातृका का भव्य चित्रण। गुप्तकाल और चोलकाल में सप्तमातृका मूर्तियों का निर्माण।

संग्रहालयों में संरक्षण

सप्तमातृका से जुड़ी प्राचीन मूर्तियाँ आज भारत और विदेशों के संग्रहालयों में संरक्षित हैं। मध्य प्रदेश में विशेषतः भोपाल स्थित राज्य संग्रहालय और उज्जैन स्थित त्रिवेणी संग्रहालय में सप्तमातृका की मूर्तियां प्रदर्शित है, जो मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों जैसे, मालवा क्षेत्र के उज्जैन, मंदसौर, जावरा; बुंदेलखंड – बघेलखंड के रीवा, नांदचंद – पन्ना; मंडला आदि से उत्खनीत की गई है।

त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन में सप्तमातृकाएँ

त्रिवेणी संग्रहालय का परिचय

त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन, 2016 में स्थापित एक सांस्कृतिक केंद्र है। यह संग्रहालय मालवा क्षेत्र की प्राचीन और मध्यकालीन मूर्तिकला, शिल्पकला, और धार्मिक परंपराओं को संरक्षित करता है। संग्रहालय का उद्देश्य उज्जैन और उसके आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त पुरातात्विक धरोहर को संरक्षित करना और उनके महत्व को जनसामान्य तक पहुँचाना है। यह संग्रहालय तीन मुख्य दीर्घाओं में विभाजित है:

शैव परंपरा: शिव और उनके विभिन्न रूपों को दर्शाने वाली मूर्तियाँ।
वैष्णव परंपरा: विष्णु और उनके अवतारों का चित्रण।
शाक्त परंपरा: शक्ति और उनके विविध रूपों का प्रदर्शन।

सप्तमातृका का शाक्त दीर्घा में स्थान

संग्रहालय की शाक्त दीर्घा, जिसे दुर्गायान भी कहा गया है, सप्तमातृका की मूर्तियों के लिए विशेष रूप से जानी जाती है। ये मूर्तियाँ उज्जैन और मालवा क्षेत्र से प्राप्त की गई हैं।

मूर्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सप्तमातृका की मूर्तियाँ गुप्तकाल और परवर्ती काल (4वीं से 10वीं शताब्दी) की उत्कृष्ट शिल्पकला का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक देवी को उनके वाहनों, हथियारों, और प्रतीकों के साथ दिखाया गया है। मूर्तियों में देवी ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, वाराही, इन्द्राणी, कौमारी, और चामुंडा को क्रमबद्ध रूप से दिखाया गया है। आभूषणों और वस्त्रों की

© 2025 प्रणय शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बारीक नक्काशी मूर्तिकला के उन्नत शिल्प को दर्शाती है। देवियों के चेहरे के भाव उनके स्वभाव और शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रतीकात्मकता और धार्मिक महत्व

ब्रह्माणी सृजन शक्ति को दर्शाती हैं और उनके पास हंस वाहन है।
वैष्णवी पालन की शक्ति की प्रतीक हैं और गरुड़ पर विराजमान हैं।
माहेश्वरी संहार और विनाश का प्रतीक हैं, उनके पास नंदी वाहन है।
वाराही पराक्रम और बल का प्रतीक हैं, उनका वाहन वराह (सूअर) है।
इन्द्राणी शक्ति और सत्ता का प्रतिनिधित्व करती हैं, उनके पास हाथी वाहन है।
कौमारी युद्ध और विजय की देवी हैं, उनका वाहन मोर है।
चामुंडा बुराई और अराजकता का अंत करने वाली हैं, उन्हें उग्र रूप में दिखाया गया है।

मूर्तियों की संरचना और शिल्पकला

संग्रहालय में सप्तमातृका की मूर्तियाँ स्थानीय पत्थरों से बनी हैं। इनमें न केवल शिल्प कौशल की उत्कृष्टता दिखाई देती है, बल्कि उनकी संरचना धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद से परिपूर्ण है। शाक्त दीर्घा की सारी बड़ी मूर्तियां स्थानक शैली यानि खड़ी हुई मुद्रा में है।
दीर्घा में प्रवेश करते ही देवी मूर्तियों के दर्शन होते हैं, जिसमे पार्वती, गौरी, सरस्वती, भुवनेश्वरी, गंगा, भद्रकाली, महिषासुरमर्दिनी, विनायिकी और सप्तमातृकाओं की मूर्तियां प्रदर्शित है। इन मूर्तियों का कलात्मक, भावात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन निम्नानुसार है :

1. **ब्रह्माणी**: 9वीं शती ईस्वी, इंद्रगढ़, मंदसौर से प्राप्त, प्रतिहार काल से संबंधित, जिसके आयाम 38x32x12 cm है। वर्तमान में यह मूर्ति केवल आधी यानी शरीर का ऊपरी हिस्सा में प्रदर्शित है। मूर्ति को बलुआ पत्थर से निर्मित किया गया है। ब्रह्माणी, भगवान ब्रह्मा की शक्ति है, मूर्ति में इसके साक्ष्य चार मुख और छः भुजाएं होने से ज्ञात होते हैं।
2. **कौमारी:** 9वीं शती ईस्वी, आवरा, मंदसौर से प्राप्त, जो वर्तमान में आधी ही प्रदर्शित है, बलुआ पत्थर से निर्मित की गई है। भगवान कार्तिकेय की शक्ति कौमारी के तीन नेत्र और चार भुजाएं है।
3. **ब्राह्मी या ब्रह्माणी:** 6वीं शती ईस्वी, नांदचंद, पन्ना जिले से प्राप्त, गुप्तोत्तर कला शैली में निर्मित, जिसके आयाम 123x56x13 cm है। यह मूर्ति स्थानक मुद्रा में अंकित, लाल बलुआ पत्थर से बनाई गई है। ब्राह्मी की मूर्ति होने के साक्ष्य, दाहिने हाथ में स्रुवा, सूत्र और बाएं हाथ में पुस्तक तथा कुंडी से प्राप्त होते हैं। साथ ही यह मूर्ति सामने से देखने पर तीन मुखों वाली चतुर्भुजी है, जिसके दाहिने तरफ नीचे के ओर हंस निर्मित है।
4. **वैष्णवी:** 6वीं शती ईस्वी, नांदचंद, पन्ना जिले से प्राप्त, उत्तर गुप्तकालीन कला शैली में निर्मित मूर्ति जिसके आयाम 119x57x22 cm है। स्थानक मुद्रा में द्विभंग मुद्रा भी लक्षित है। अलंकरण भर से मुक्त और सजीव आलेखन में यह मूर्ति लाल बलुआ पत्थर से बनी है। वैष्णवी, भगवान विष्णु की शक्ति है, जो अजातहस्त मुद्रा में है और नीचे की ओर गरुड़ वाहन अंकित है।
5. **माहेश्वरी:** 6वीं शती ईस्वी, नांदचन्द, पन्ना जिले से प्राप्त, उत्तर गुप्तकालिन कला शैली में निर्मित मूर्ति के आयाम 125x58x18 cm है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्ति, आभूषणों के भार से मुक्त है अर्थात मूर्ति में केवल अंगो को सुंदर रूप से तथा भुजाओं में अस्त्र शस्त्र बनाए गए हैं तथा नीचे की ओर वाहन भी दर्शाए गया है। इस मूर्ति में जटा जुटहोने के साथ वाहन वृषभ बनाया गया है, जो शिव की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।
6. **कौमारी:** 6वीं शती ईस्वी, नांदचंद, पन्ना जिले से प्राप्त, उत्तर गुप्तकालीन कला शैली में बनी यह मूर्ति 125x61x20 cm आयाम की हैं। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्ति द्विभूजी है। कौमारी, कार्तिकेय की शक्ति है, जिनका वाहन मयूर मूर्ति में कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। द्विभुजी होने के साथ बाएं हाथ में आयुध शक्ति अर्थात भाला निर्मित किया गया है।
7. **इंद्राणी:** 5वीं शती ईस्वी, नांदचंद, पन्ना जिले से प्राप्त, गुप्तोत्तर काल की कला शैली में निर्मित मूर्ति के आयाम 123x61x18 है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्ति उत्तर गुप्त कालीन है। इंद्राणी, भगवान इंद्र की शक्ति है, इस प्रतिमा में दाएं गोद में शिशु, मातृत्व भाव को दर्शाता है। चहरे पर सौम्य भाव और पादपीठ पर वाहन गज अर्थात हाथी को कलात्मक रूप में निर्मित किया गया है, जो इंद्र की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।
8. **चामुंडा:** 13वीं शती ईस्वी, नरेसर, मुरैना जिले से प्राप्त यह मूर्ति पीले बलुआ पत्थर से निर्मित है। चामुंडा, भैरव की शक्ति है। देवी महात्म्य, मार्कण्डेय पुराण में इनका विशद वर्णन है। मां अंबिका के मस्तक से काली उत्पन्न हुई, उन्होंने शुंभ-निशुंभ के सेनापतियों चंड और मुंड को मारकर उनके सिरों को देवी के पास लाई इसलिए इन्हे चामुंडा कहा गया। इस मूर्ति में शिल्पी ने परवर्ती प्रतिहार कला के लक्षणों का समावेश किया है।

रौद्र भाव व्यक्त करते हुए विशाल नेत्र, खुला मुख व अवनत उदर, चामुंडा को प्रदर्शित करता है। देवी के पार्श्वचरो का आलेखन भी शिल्प विधान के अनुरूप है।

9. **चामुंडा:** 12वीं शती ईस्वी, उज्जैन से प्राप्त, प्रकार कालीन मूर्ति, बलुआ पत्थर से निर्मित है, जिसके आयाम 36x19x16 cm है। वर्तमान में यह मूर्ति केवल एक चौथाई भाग में विद्यमान है। यह प्रतिमा अष्टभुजी होने का संकेत देती है और इसकी एक विशेषता यह है कि मूर्ति के उदर में वृश्चिक बना हुआ है।
10. **ब्राह्मी:** 10वीं शती ईस्वी, सतना से प्राप्त मूर्ति, अष्टभुजी और त्रिमुखी है। वर्तमान में यह प्रतिमा केवल ऊपरी भाग अर्थात स्तन तक ही उपलब्ध है। पीले बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्ति, कल्चुरी कला की कृति है, जिनके मुख पर सौम्य भाव है। प्रतिमा का शिल्प बहुत ही सुंदर और अति सूक्ष्म नक्काशी की गई है, जो उनके आभूषणों से परिलक्षित होती है।
11. **चामुंडा:** 10वीं शती ईस्वी, बिझौली, मंडला जिले से प्राप्त मूर्ति लाल बलुआ पत्थर से निर्मित कल्चुरी कला शैली में बनी है जिसके आयाम 36x57x31 cm, है। मूर्ति ललितासन मुद्रा में बनाई गई है। शिल्प विधान के अनुरूप, हाथों में खप्पर, खटवांग, नरमुंड और वाहन शव पर आरूढ़ देवी का रौद्र स्वरूप और शारीरिक संरचना भी शास्त्रीय निर्देशों के अनुरूप है।
12. **वैष्णवी:** 14वीं शती ईस्वी में उज्जैन से प्राप्त चतुर्भुजी, ललितासन में निर्मित मूर्ति, जिनके दाएं हाथ में पद्म पुष्प और बाएं हाथ में शंख है। शिल्प विधान के अनुरूप, किरितमुकूट का आलेखन न करते हुए, करण्डमुकुट का आलेखन किया गया है।

© 2025 प्रणय शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गुप्तकालीन शैली: इन मूर्तियों पर गुप्तकालीन मूर्तिकला शैली का प्रभाव स्पष्ट है। यह शैली संतुलित संरचना, सौंदर्य, और प्रतीकात्मकता का आदर्श उदाहरण है।
अनूठापन: मूर्तियों की शैली उज्जैन की क्षेत्रीय विशेषताओं और मालवा की कला परंपरा को प्रतिबिंबित करती है।

सप्तमातृका की उपासना परंपराएँ

1. धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ

सप्तमातृका की उपासना का प्राचीन भारत की धार्मिक परंपराओं में महत्वपूर्ण स्थान है। यह उपासना शैव, वैष्णव और शाक्त परंपराओं का संगम मानी जाती है। सप्तमातृका की पूजा तांत्रिक अनुष्ठानों का अभिन्न हिस्सा है। तंत्र ग्रंथों में इन्हें ब्रह्मांडीय ऊर्जा के सात रूपों के रूप में दर्शाया गया है। नवरात्रि के दौरान सप्तमात्रिका की पूजा विशेष रूप से की जाती है। देवी दुर्गा की उपासना में इन सात मातृ शक्तियों को उनका सहायक रूप माना जाता है। दक्षिण भारत में सप्तमात्रिका की उपासना मंदिरों में नियमित रूप से की जाती है। मध्य भारत में इनकी पूजा खेतों और जंगलों के समीप की जाती है, जहाँ वे प्राकृतिक शक्तियों की संरक्षक मानी जाती हैं।

2. महाकालेश्वर मंदिर का संबंध

महाकालेश्वर मंदिर के समीप सप्तमातृका की पूजा का ऐतिहासिक उल्लेख मिलता है। सप्तमातृका को महाकाल की शक्तियाँ माना जाता है, जो उज्जैन को उनकी उपासना का केंद्र बनाती हैं।

3. त्रिवेणी संग्रहालय की भूमिका

संग्रहालय सप्तमातृका से जुड़ी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित कर रहा है। इन मूर्तियों के माध्यम से प्राचीन शक्ति उपासना परंपराओं को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

4. लोक परंपराओं में सप्तमातृका

सप्तमातृका लोककथाओं और लोककला में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। सप्तमातृका को लोककथाओं में प्राकृतिक आपदाओं और बुराई से बचाने वाली देवियाँ माना गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी पूजा खेतों की उर्वरता और जल स्रोतों की सुरक्षा के लिए की जाती है। सप्तमातृका को ग्रामीण उत्सवों में नृत्य और गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। लोककला में इनके रूपों को मिट्टी और लकड़ी की मूर्तियों में दर्शाया गया है। समकालीन समाज में सप्तमात्रिका की पूजा न केवल धार्मिक उद्देश्य से की जाती है, बल्कि उनके प्रतीकवाद का उपयोग मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है।

5. योग और ध्यान

सप्तमातृका को शरीर के सात चक्रों से जोड़कर योग और ध्यान में शामिल किया जाता है।

6. स्त्री सशक्तिकरण का प्रतीक

सप्तमातृका को स्त्री शक्ति और मातृत्व के प्रतीक के रूप में मान्यता दी जाती है।

निष्कर्ष

त्रिवेणी संग्रहालय में सप्तमातृका की मूर्तियाँ भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक धरोहर का अद्भुत नमूना हैं। इन मूर्तियों का विस्तृत अध्ययन प्राचीन शक्ति उपासना परंपराओं, क्षेत्रीय कलात्मकता, और स्त्री शक्ति की भूमिका को समझने में सहायक है। इस शोध ने त्रिवेणी संग्रहालय की मूर्तियों के माध्यम से सप्तमातृका के प्रतीकात्मक, सांस्कृतिक, और धार्मिक महत्व को उजागर किया है। इनके संरक्षण और अध्ययन के माध्यम से भारतीय कला और संस्कृति की वैश्विक पहचान को और मजबूत किया जा सकता है।

त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन की सप्तमातृका मूर्तियों पर आगे के शोध की संभावनाएँ

1. मूर्तियों का तुलनात्मक अध्ययन: त्रिवेणी संग्रहालय की सप्तमातृका मूर्तियों की तुलना अन्य संग्रहालयों या स्थलों (जैसे एलोरा और मथुरा) की मूर्तियों से की जा सकती है।
2. शक्ति उपासना का ऐतिहासिक अध्ययन: इन मूर्तियों के माध्यम से उज्जैन की प्राचीन शक्ति उपासना परंपराओं को और गहराई से समझा जा सकता है।
3. संरक्षण और डिजिटलीकरण: संग्रहालय में संरक्षित मूर्तियों को डिजिटलीकरण करके वैश्विक स्तर पर इनके अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संदर्भ पुस्तके

1. Bose M. Faces of the feminine in ancient, medieval, and modern India. Oxford: Oxford University Press; 2000.
2. Kinsley DR. Hindu goddesses: Visions of the divine feminine in the Hindu religious tradition. Berkeley: University of California Press; 1988.
3. Bhattacharya B. The Indian mother goddess. New Delhi: Asian Educational Services; 1977.
4. Banerjea JN. The development of Hindu iconography. Kolkata: University of Calcutta; 1956.
5. Rao TAG. Elements of Hindu iconography. Delhi: Motilal Banarsidass; 1914.
6. Huntington SL, Huntington JC. The art of ancient India: Buddhist, Hindu, Jain. New York: Weatherhill; 1985.
7. Harle JC. The art and architecture of the Indian subcontinent. New Haven: Yale University Press; 1994.
8. Sharma RK. Indian symbolism: Symbols as sources of our customs and beliefs. Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers; 1978.
9. Agrawal VS. Indian art through the ages. Varanasi: Prithivi Prakashan; 1965.
10. Eck DL. India: A sacred geography. New York: Harmony Books; 2012.

संदर्भ शोध पत्र

1. Trivedi S. Ujjain's Triveni Museum: A confluence of spiritual and artistic heritage. Indian Art Journal. 2018;10:45–55.
2. Srinivasan D. Concept of motherhood in Indian art and culture. South Asian Studies. 1994;12(4):123–38.

© 2025 प्रणय शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. Shulman D. Tamil temple myths: Sacrifice and divine marriage in the South Indian Saiva tradition. Princeton: Princeton University Press; 1980.
4. Singh U. Regional aspects of Shakti worship in ancient India. J Indian Hist. 2008;34(2):78–91.
5. ASI Reports. Monuments of Ujjain and Malwa region. New Delhi: Archaeological Survey of India; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 प्रणय शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/